E: ISSN NO.: 2349-980X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-9*(Part-1) May- 2019
Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika

भारत में बढते नगरीयकरण का आर्थिक विकास पर प्रभाव

भूपेन्द्र कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर,
अर्थशास्त्र विभाग,
वी0वी0 (पी0जी0) कॉलेज,
शामली, भारत

सारांश

महान दार्शनिक अरस्तू ने भी कहा था कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है इसने सभ्यता की शुरूआत में सर्वप्रथम संकेतो के माध्यम से अपनी अभिव्यक्ति को स्पष्ट किया समय बदलता रही और यह संकेत वाणी मे बदल गये यह भाषा का ही प्रभाव था जिसने सम्पूर्ण मानव प्रजाति को एक सूत्र मे बाँध दिया तथा समाज, संस्कृति और राष्ट्र की अवधारणा को मजबूत किया सभ्यता की शुरूआत से ही मनुष्य अपनी आवश्यकताओ की पूर्ति के लिए अन्य लोगो के साथ सहयोग की परम्परा का सफलता पूर्वक निर्वहन कर रहा है किन्तु विकास एवं नगरीकरण की प्रक्रिया ने जिस गति से हमारे समाज को प्रभावित किया है।वह निश्चित रूप से चिन्ता का विषय हैं।नगरीकरण आर्थिक प्रगति का पैमाना है आजादी से पहले जब भारतीय अर्थव्यवस्था में विकास की गति बहुत कम थी जब यहाँ नगरीकरण भी बहुत कम हो रहा था आजादी के बाद जैसे–जैसे देश का आर्थिक विकास होता गया वैसे–वैसे देश में नगरो की संख्या तथा नगरीय जनसंख्या भी बढती चली गयी पूरे विश्व की तरह ही आज भारत में भी नगरीयकरण बढ रहा है।

मुख्य शब्द : नगरीयकरण, आर्थिक विकास, जनसंख्या, औद्योगीकरण ।

प्रस्तावना

भारत में नगरो के विकास का वर्तमान काल 19वीं सदी के मध्य से प्रारम्भ हो गया था अंग्रेजो ने चेन्नई,मुम्बई का विकास किया कोलकाता को अपनी राजधानी बनाया।1907 में जमशेदपुर में और फिर कुलटी बर्नपुर भदावली में लौंह इस्पात के कारखाने स्थापित किये सैनिको की छावनी के रूप में नगरो को बसाया ग्रीष्मकालीन राजधानी के रूप मे शिमला,नैनीताल,दार्जलिंग पचमढी आबू आदि,नगरो को बसाया 1951 से 2011 तक 60वर्षो मे भारत में नगरीय जनसंख्या में अत्यंत वृद्धि हुई,भारत में जनसंख्या वृद्धि एवं आर्थिक प्रगति में सुधार के साथ–साथ नगरीय जनसंख्या में भी वृद्धि होती जा रही है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य नगरीयकरण व जनसंख्या वृद्धि के बीच सम्बन्ध करना है।
2. नगरीकरण व आर्थिक विकास के बीच पाए जाने वाले सम्बन्धो का विश्लेषण करना।
3. शोध के उद्देश्यो के अनुसार निष्कर्ष व सुझाव देना।

परिकल्पनाएं

1. नगरीयकरण का आर्थिक विकास पर सकारात्मक प्रभाव पडता है या नकारात्मक प्रभाव पडता है।
2. जनसंख्या वृद्धि से नगरीयकरण को बढावा मिला है या नही।

भारत में नगरीयकरण की प्रवृत्ति 1951–2011

वर्ष	नगरो की संख्या	कुल जनसंख्या करोड में	ग्रामीण जनसंख्या करोड़ में	नगरीय जनसंख्या करोड़ में	कुल जनसंख्या में ग्रामीण जनसंख्या का प्रतिशत	कुल जनसंख्या में नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत
1951	2843	36.10	29.86	6.24	82.71	17.29
1961	2365	43.92	36.03	7.89	82.03	17.97
1971	2590	54.82	43.91	10.91	80.09	19.91
1981	3378	68.33	52.38	15.95	76.66	23.34
1991	3768	84.43	62.71	21.72	74.29	25.71
2001	5161	102.87	74.26	25.74	72.19	27.81
2011	7935	121.02	83.31	37.71	68.84	31.16

यहाँ पर हम देख सकते है कि जहाँ भारत में 1951 मे नगरों की संख्या 2,843 तथा नगरीय जनसंख्या 6.24 करोड थी वह 60 वर्षो में बढकर नगरो की संख्या 7935 तथा नगरीय जनसंख्या 37.71 करोड हो गयी देश में 1951–61 के दशक में औद्योगीकरण को बढावा देने का प्रयास किया गया। इस दौरान कुल नगरीय जनसंख्या में 1.65 करोड की वृद्धि हुई कि गांव के लोग किस प्रकार शहरी संस्कृति के आकर्षण के कारण गांव से शहर की ओर पलायन कर रहे है। जहाँ 1951 में गांव मे निवास करने वाले ग्रामीणो का प्रतिशत 82.71 था वह 2011 में घटकर 68.84 रह गया है हम अगर गांवो में ही मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति कर दे तो गांव से हो रहे इस तीव्र गति के पलायन को रोका जा सकता है।

सेंसेक्स आफ इण्डिया 2001 की रिर्पोट के अनुसार आसाम (12.9प्रतिशत) अरूणाचल प्रदेश (20. 8प्रतिशत) छत्तीसगढ (20.1प्रतिशत)हिमाचल प्रदेश (19. 6प्रतिशत)आदि देश के कई प्रदेश है जहां नगरीकरण 21 प्रतिशत से कम था और एक दशक बाद भी सेंसेक्स आफ इण्डिया 2011 की रिर्पोट के अनुसार आसाम (14.1) अरूणाचल प्रदेश (22.9प्रतिशत) छत्तीसगढ (23.2 प्रतिशत) हिमाचल प्रदेश (10प्रतिशत) मेधालय (20.1प्रतिशत) आदि नगरीयकरण में 0.8प्रतिशत से 3प्रतिशत की वृद्धि हुई लेकिन इन राज्यों की एक दशक का विकास का रिर्पोट कार्ड अच्छा रहा। और वही दूसरी और ऐसे प्रदेश जैसे केरल(26प्रतिशत) उत्तराखण्ड(25.7प्रतिशत) नागालैंड(17. 2प्रतिशत) सिक्किम(25.2प्रतिशत) एक दशक मे नगरीकरण में 5 से 21 प्रतिशत तक वृद्धि हुई वहॉ भी विकास की कोई ऐसी नई इबादत लिखी नही दिखाई देती है।

नगरीकरण का आर्थिक विकास पर सकारात्मक प्रभाव

नगरीकरण में सकारात्मक प्रभाव के अर्न्तगत देखा जा सकता है। कि नगरीकरण आर्थिक विकास का सूचक हैं।सामान्यतः यह देखा जाता है कि जैसे–जैसे किसी देश का आर्थिक विकास होता है। वैसे–वैसे नगरीय क्षेत्रो की जनसंख्या का अनुपात बढता जाता है।नगरीयकरण तथा औद्योगीकरण दोनो साथ–साथ चलते है।नगरो मे उद्योगो के विकास से सहायक उद्योग धन्धे विकसित होने लगते है। रोजगार के अवसरो का विस्तार होता है।नगरो में स्वास्थय सुविधाओं के सुचारू रूप से उपलब्ध होने के कारण लोगो की रूढिवादी मानसिकता मे सुधार आता है।नगरो मे लोग अधिक प्रगतिशील शिक्षित,विवेकशील और जागरूक होते हैं।नगरीकरण के विकास के साथ–साथ ही देश में राष्ट्रीय आय में वृद्धि को भी स्पष्ट रूप से देखा जा सकता हैं।प्राप्त आंकडो के अनुसार नगरीकरण से प्रति व्यक्ति आय और राष्ट्रीय आय में वृद्धि हुई है।और लोगो के जीवनस्तर मे सुधार आया है।

नगरीकरण का नकारात्मक प्रभाव

वही दूसरी ओर अगर नगरीकरण के नकारात्मक प्रभावो को देखे तो वह भी कम नही है। नगरीकरण के कारण पर्यावरण में प्रदूषण की समस्या विकराल रूप ले रही है।नगरीकरण की ही देन है कि आज ग्लोबल वार्मिंग जैसे विकट समस्या आ खडी हुई है नगरीकरण के कारण मलिन बस्तियों की संख्या बढती जा रही है।नगरो के निर्माण के कारण समाज में आर्थिक विषमताएँ विद्यमान हो गई है।समाज दो वर्गों मे बट गया है धनी एवं निर्धन जिस कारण लोगो में आपराधिक प्रवृत्ति बढ गयी है,लोगो में भारतीय संस्कृति समाप्त सी हो गई है।समाज की यह स्थिति गम्भीर दशा का परिचायक है समझ नही आता ''वसुधैव कुटुम्बकम''की राह पर चलने वाला हमारा समाज इस नगरीकरण के कारण कितनी छोटी मानसिकता का हो गया है आज अपने परिवार के लोगो आस पड़ोस के लोगो से मिलने, उनके सुख दुख मे साथ आने की आदत को पूरी तरह से छोड़ता जा रहा है।

निष्कर्ष

शोध पत्र के आंकडो के अध्ययन से प्रदर्शित हो रहा है कि विकास के लिए नगरीकरण उतना आवश्यक नही है जितना कि इसे बना दिया गया है बढ़ते नगरीकरण के सकारात्मक प्रभावो के साथ ही नगरीकरण के नकारात्मक प्रभाव भी बहुत है जो कि भारतीय संस्कृति समाज के नैतिक मूल्यों को खत्म करते जा रहे है। हमे अगर सतत विकास के बारे में सोचना है तो हमे गांवो को ही मूलभत सुविधाओ से परिपूर्ण करने पर ज्यादा ध्यान देना होगा, क्योंकि नये नगरो को बसाने से ज्यादा अच्छा है कि हम बसे बसाये गांवो को विकसित करें।ग्रामीणो को ग्रामीण अंचल मे ही रोजगार पूरक शिक्षा का विस्तार किया जाये लघु तथा कुटीर उद्योगो को बढावा दिया जाये क्योंकि शोध पत्र में हमने देखा कि एक दशक मे उन राज्यो ने अच्छा विकास किया जहां पर नगरीकरण में ज्यादा वृद्धि नही हुई है अगर नगरीकरण की इस तीव्र गति को रोका न गया तो हम विकास तो कर लेंगे लेकिन सतत् विकास को पाना बहुत मुश्किल हो जायेगा इसलिए हमे गांवो को जहां पर्यावरण अच्छा है समाज में नैतिक मूल्य बचे हुये है बस आवश्यकता है उन्हे मूलभूत आवश्यकताओ की पूर्ति की रोजगार के अच्छे अवसरो की जिन्हे पाकर वह देश के आर्थिक विकास में नई इबादत लिख सके और हम अपनी अगली पीढी और दिखा सके की यह भारत है जो गांवो में बसता है।

सुझाव

1. परिवार नियोजन सम्बन्धी कार्यक्रमो को बढावा देकर जनसंख्या नियन्त्रित करनी होगी।
2. गांवो मे स्वास्थय शिक्षा जैसी मूलभूत सुविधाओ को बढाना होगा।
3. गांवो में कुटीर उद्योगो को प्रोत्साहित करना होगा।

यह माना जाता है कि नगरीकरण एवं आर्थिक विकास में गहरा सम्बन्ध हैं। ये दोनो एक दूसरे के प्रतिद्धन्दी न होकर एक दूसरे के पूरक है। टी0सी0कृष्णामाचारी के शब्दों में–''आर्थिक विकास में नगरीकरण का वही महत्व है जो आध्यात्मिक क्षेत्र में ईश्वर का हैं।''आजकल अनेक अल्पविकसित देश यह विश्वास करते है कि उनके पिछडेपन का एक मात्र समाधान आर्थिक विकास ही हैं। और आर्थिक विकास के अर्न्तगत नगरीकरण को सर्वोपरि माना गया है क्योंकि विकास प्रक्रिया के द्वारा ही नगरीकरण का निर्माण हुआ हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

मानव भूगोल के सरल सिद्धान्त– एस0 डी0कौशिक
भारतीय आर्थिक समस्याएं–डा0 जे0 सी0 पन्त, डा0जे0पी0मिश्रा
मानव भूगोल – माजिद हुसैन
नगरीय भूगोल –सुरेशचन्द्र बंसल
भारत का भूगोल–डा0चतुर्भुज मामेरिया,डा0जे0पी0मिश्रा
आर्थिक विकास एवं नियोजन –एस0पी0सिंह
सेसेंक्स आफ इण्डिया 2001की रिर्पोट
सेसेंक्स आफ इण्डिया 2011 की रिर्पोट
प्रतियोगिता दर्पण,समसामयायिक वार्षिकी 2014
दैनिक समाचार पत्र